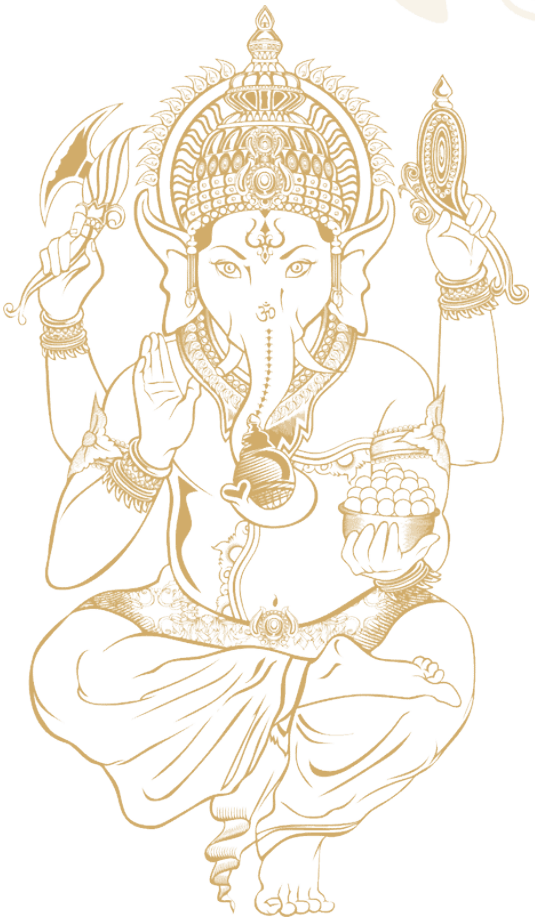

Baby of Gaurav

20 Jul 2025

01:22 AM

Bangalore

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119349601**

तिथि 20/07/2025 **समय** 01:22:00 **वार** रविवार **स्थान** Bangalore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:54
अक्षांश 13:00:00 उत्तर **रेखांश** 77:35:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:53:46 घं
वेलान्तर	00:06:24 घं
सूर्योदय	06:02:16 घं
सूर्यास्त	18:49:24 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	श्रावण
पक्ष	कृष्ण
तिथि	10
नक्षत्र	कृतिका
योग	गण्ड
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	अ-अश्विनी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	गुरु
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

सूर्य 5वर्ष 9मा 18दि

सूर्य

20/07/2025
08/05/2031

सूर्य	25/08/2025
चन्द्र	24/02/2026
मंगल	01/07/2026
राहु	26/05/2027
गुरु	13/03/2028
शनि	23/02/2029
बुध	31/12/2029
केतु	08/05/2030
शुक्र	08/05/2031

योगिनी

उल्का 5वर्ष 9मा 18दि

उल्का

20/07/2025
08/05/2031

उल्का	08/05/2026
सिद्धा	08/07/2027
संकटा	06/11/2028
मंगला	06/01/2029
पिंगला	07/05/2029
धान्या	06/11/2029
भ्रामरी	08/07/2030
भद्रिका	08/05/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			25:55:00	मेष	भरणी	4	शुक्र	केतु	---	0:00			
सूर्य			03:10:27	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.48	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			27:06:41	मेष	कृतिका	1	सूर्य	सूर्य	सम राशि	1.25	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			24:40:21	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	मित्र राशि	1.17	अमात्य	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध		व	21:15:08	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	1.17	मातृ	ज्ञाति	वध
गुरु			14:50:34	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	केतु	शत्रु राशि	1.14	पुत्र	धन	क्षेम
शुक्र			22:47:09	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	सूर्य	स्वराशि	1.45	भ्रातृ	कलत्र	सम्पत
शनि		व	07:40:56	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	सम राशि	1.19	ज्ञाति	आयु	साधक
राहु		व	25:31:24	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु		व	25:31:24	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

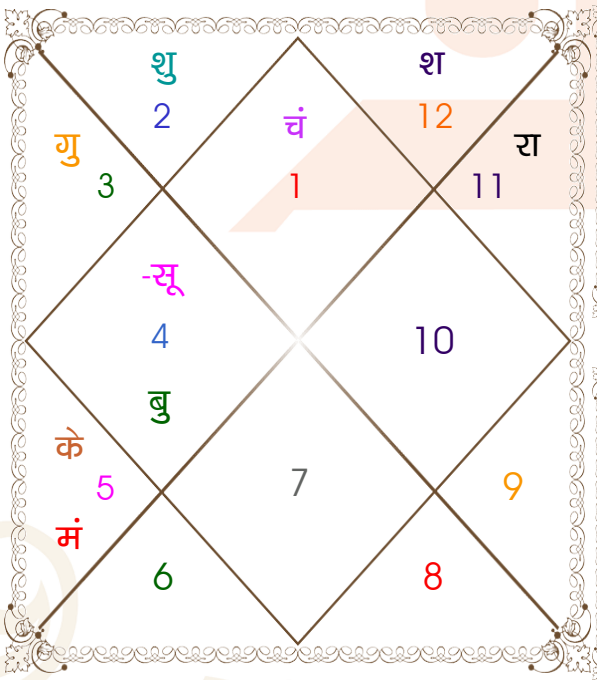

चन्द्र कुंडली

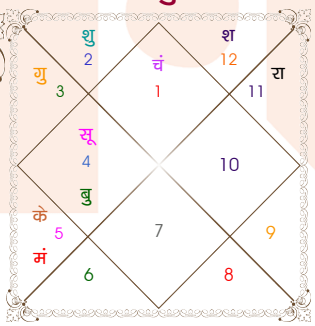

नवमांश कुंडली

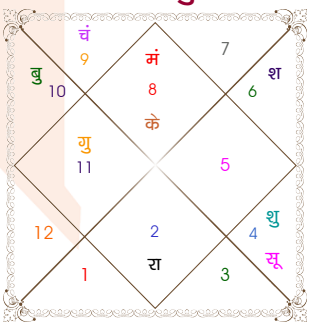

सर्वाष्टकवर्ग

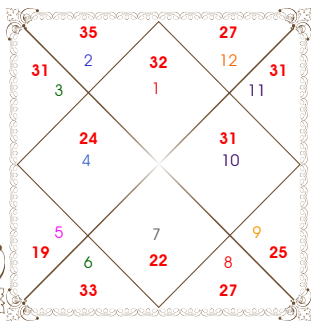

दशमांश कुंडली

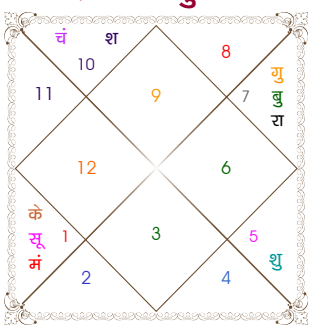

नक्षत्रफल

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल है। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, वर्ग गरूड़, योनि मेष, नाड़ी अन्त्य तथा गण राक्षस है। कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने के कारण आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "अ" या "आ" से प्रारम्भ होगा। यथा-अरूण, अनुज, आदित्य आदि।

इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आप कंजूस किस्म के व्यक्ति होंगे। आप धन का संग्रह तो करेंगे परन्तु व्यय करने में अत्यन्त ही कृपणता का परिचय देंगे। आपके द्वारा किए गए कार्यों से अन्य लोगों को यदा कदा कष्ट होगा। आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी तथा आपके मन में काम करने की इच्छा का भी अभाव रहेगा।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरूते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आप सामान्य भोजन करने वाले होंगे तथा किसी की भी बात को सहन करने की शक्ति का आपमें अभाव रहेगा। साथ ही आप अपने क्षेत्र के विख्यात व्यक्ति भी होंगे।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

विद्या आप अवश्य प्राप्त करेंगे और यही विद्या आपका धन होगी। आप विद्वान तथा उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं। साथ ही आप तेजस्वी पुरूष भी होंगे।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक तेजस्वी, उच्चाधिकार प्राप्त, विद्वान तथा विद्या का धनी होता है।

सत्य का पालन आप अपने जीवन में कम ही करेंगे। व्यर्थ भ्रमण करना भी आपकी दिनचर्या का एक अंग होगा। बोलने में आप कभी कभी कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे जो सुनने वाले को अच्छा नहीं लगेगा।

आप अपने कर्तव्यों का पालन भी अल्प मात्रा में ही करेंगे। यदा कदा धनाभाव से भी आप जीवन में कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतध्नः।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतध्न कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प भोजन करने वाले होंगे। तथा अन्य भाई बहिन हुए तो उनमें आप श्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा आँखें लालिमा से युक्त गोल तथा चंचल होंगी। किसी घाव या चोट के कारण सिर में निशान होगा तथा सिर में बाल भी कम ही होंगे। आपके हाथ तथा पैर कान्ति युक्त होंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। साहस का आपमें अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन में कठिन से कठिन समस्याओं का आप साहसपूर्वक मुकाबला करेंगे। समाज से आपको उचित आदर मिलेगा। बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को आप मान सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे जिससे समय समय पर समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके पास मित्रों तथा सहयोगियों की बहुलता रहेगी। साथ ही पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक होगी। स्त्री जाति आपकी विशेष रूप से कमजोरी रहेगी। लेकिन

सभी को आप स्नेह की दृष्टि से देखेंगे। परिणाम स्वरूप सभी लोग आप पर विश्वास रखेंगे तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्विंतत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व देना तथा स्त्रियों के प्रति अधिक आकर्षित रहना इस प्रवृति से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट हो जाएंगे परिणाम स्वरूप या तो वे आपसे अलग हो जाएंगे या आप स्वयं उनसे अलग हो जाएंगे। साथ ही घर के सारे कार्य आप अपनी पत्नी के कथनानुसार ही सम्पन्न करते हैं। अतः वैमनस्य में वृद्धि होती रहेगी। धन तथा पुत्रों से आप आजीवन युक्त रहेंगे तथा अपने वैभव से समाज में अच्छी कीर्ति प्राप्त करेंगे।

वृतातामदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

आपका स्वभाव शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र ही प्रसन्न होने वाला होगा तथा इधर उधर भ्रमण करना आपको रूचिकर लगेगा। आपकी हथेलियों में शौर्यसूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप विशेष प्रिय तथा सम्मानीय समझे जाएगे। आपके अर्न्तमन में सेवा का भाव स्वाभाविक रूप से रहेगा। चाहे आप कैसी ही विषम परिस्थितियों में चल रहे हों अन्य लोगों की सहायता करने के लिए आप तत्पर रहेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण में आपकी रूचि ऐसे स्थानों में जाने की होगी जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंधों की विस्तृता के कारण यदा कदा आप मांस, मदिरा आदि पदार्थो का भी भक्षण कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता का समावेश हो जाता हैं। यह उग्रता जब क्रोध के रूप में उत्पन्न होगी तो उससे अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पडेगा। प्रवृति में चंचलता के कारण आप कभी कभी मिथ्या भाषण भी करेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्कितांङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी तथा सिर पर केश अल्प मात्रा में होंगे। गर्म पदार्थो तथा अन्य पित्त बढ़ाने वाली वस्तुओं से परहेज रखें अन्यथा मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। आपको अपने शरीर की भी सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए तथा दुर्घटनाओं से बचना चाहिए।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरुषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आप राक्षस गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपका स्वभाव कभी कभी व्यर्थ तथा अधिक बाते बोलने वाला होगा। आपके हृदय में करूणा की भावना अल्प ही रहेगी।

क्रोध आपको अधिक आएगा तथा छोटी छोटी बातों से उत्तेजित होना आपकी प्रवृति होगी। आप अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी भी प्रकार के कार्य करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप बलवान भी होंगे तथा अन्य जनों से बात बात पर अनावश्यक तर्क करना आपका स्वभाव होगा जिससे अधिकांश लोगों से आपका विरोध रहेगा। अतः अन्य जनों से आपको संयम पूर्वक वार्तालाप करना चाहिए।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप उन्माद या प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकते है। देखने में आपका चेहरा आकारा में बड़ा हो सकता है। कभ5 कभी आप ऐसी वाणी का उपयोग करेंगे जो अन्य जनों को अच्छी नहीं लगेगी। अतः यत्नपूर्वक आपको अपने सम्भाषण में मृदु शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अत्याधिक उत्साही प्रवृति के होंगे। आप एक बहुत बड़े योद्धा हो सकते हैं। धन और ऐश्वर्य पूर्ण रूप से आपके पास रहेगा तथा इसका अभाव नहीं होगा। आपके मन में दूसरों की भलाई करने की उत्कट अभिलाषा होगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप अन्य जनों की भलाई करते रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको

आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, एकादशी तथा षष्ठी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनो की, मघा नक्षत्र, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायी है। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 तिथियों, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन आदि शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेषराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्य में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शरीर का भी ध्यान रखे।

यदि आपको समय अनुकूल प्रतीत न हो रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए साथ ही सोना, रतांबा, गेहूं, घी, लालवस्त्र आदि पदार्थों को दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।